[श्री जैनुल बशर]

उपाध्यक्ष जी, मुझे दुख इस बात का है कि आज किसानों के इतने बड़े मामले में विरोधी दलों के बड़े-बड़े नेताओं ने भाग नहीं लिया । आज चौधरी चरण सिंह यहां होते, अटल बिहारी वाजपेयी जी यहां होते, दूसरे बड़े नेता यहां बैठ होते तो मुझे कहने में कुछ अच्छा लगता, फिर भी मैं कह सकता हूं–1977 के पहले जब जनता पार्टी नहीं थी, अलग-अलग पार्टियां थीं, उन्होंने गेहूं का 125 रुपये क्विंटल का भाव मांगा था और गन्ने का भाव 20 रुपये से 25 रुपये का मांगा था जब उन पार्टियों की जनता पार्टी बनी और वे सरकार में आये तो ए. पी. सी. ने उन को भी प्रभावित कर दिया और कमीशन के तर्क को उन को भी मानना पड़ा—वे 105 रुपये क्विंटल गेहूं का भाव और 13 रुपये क्विंटल गन्ने का भाव देकर हट गये । इस का मतलब है....

17.50 hrs.

PAPER LAID ON THE TABLE

JOINT DECLARATION ON STATE VISIT TO INDIA BY MR. LEONID I. BREZHNEV

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI P. V. NARASIMHA RAO): I beg to lay on the Table a copy of the Joint Declaration (Hindi and English versions) issued on the conclusion of the State visit to India of H. E. Mr. Leonid I. Brezhnev, General Secretary of the CPSU and Chairman of the Presidium of the Supreme Soviet of the U.S.S.R. [*Placed in Library. See* No. LT—1549|90]

17.52 hrs.

MOTION RE: REMUNERATIVE PRICES TO FARMERS FOR AGRICULTURAL PRODUCE—*Contd.*

श्री जैनुल बशर (गाजीपुर) : मैं निवेदन कर रहा था कि ए. पी. सी. के जो आर्ग्यूमेंटस थे, उनसे जनता पार्टी के नेता भी प्रभावित हो गये और उन्होंने भी किसानों के दाम नहीं बढ़ाये । मेरे पास अधिक समय नहीं है, मैं बहुत डीटेल में नहीं जाना चाहता, लेकिन मैं अपने इन साथियों से पूछना चाहता हूं कि इस देश में जो 70–75 फीसदी किसानों की बात की जाती है उन में कितने फीसदी किसान स्माल-फार्मर्स हैं, कितने फीसदी किसान मार्जिनल-फार्मर्स हैं और कितने फीसदी लैण्ड लेस फार्मर्स हैं । खुद डा० लोहिया ने, जो इन बहुत सारे लोगों के पैगम्बर थे, कहा था–सवा छः एकड़ से कम की जोत अलाभकार है । सवा 6 एकड़ से कम की जोत अलाभकारी है उसका लगान माफ होना चाहिए । तो कितने फीसदी सवा 6 एकड़ से कम के किसान हैं ? केवल 20–30 फीसदी किसान ऐसे होंगे जो कि अपने अनाज को, अपने गल्ले को या और चीजों को बाजार में बेचते होंगे । आप देखिए कि आज किस चीज का टकराव है । आज बड़ा किसान यह सोचता है कि उद्योगपति को और व्यापारी को लाभ हो रहा है वह कमा रहा है और बड़े किसान को पैसा नहीं मिल रहा है, इसमें दो राय नहीं हैं उपाध्यक्ष जी कि आज उद्योगपति और व्यापारी पैसा कमा रहे हैं, उन पर काबू पाया जाना चाहिए, लेकिन सरमाएदारों का एक और क्लास हम पैदा नहीं कर सकते । गांव में रहने वाले पूंजीपतियों का एक और क्लास हम पैदा नहीं कर सकते जो बिना पूंजी के, बिना सरमाए के लोगों का शोषण कर रहा है, अगर उसके पास पूंजी दे दी जाए तो फिर इस देश में समाजवाद की बात आप नहीं कर सकते इस देश में आप लोगों को न्याय दिलाने की बात नहीं कर सकते,